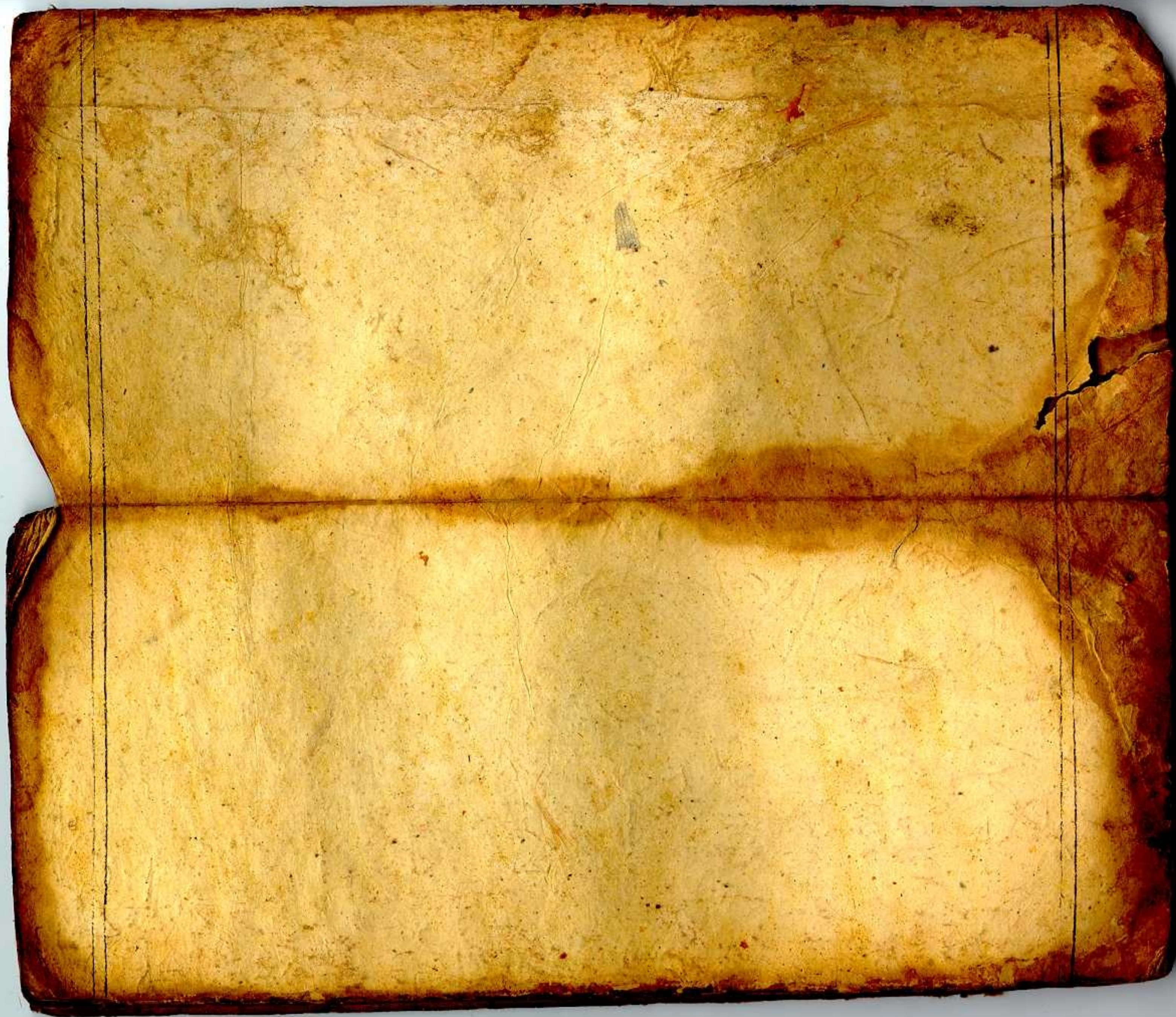


379
Nepāla mandala
ślokaś

आन्ध्रप्रदेश
1944 I
ASIA ARCHIVES



ॐ नमो गुरुभ्ये नमः ॥ श्री महाविद्यायै नमः ॥ अस्य श्री महाविद्यास्त्रोत्र महा
मंत्रस्यायं शदा शिवं मयि न गतिरुच्यते श्री महाविद्या कालीका देवता शदा प्र
जायते ॐ श्री मनोवांछित सिद्ध्ये ॐ सर्वाभीष्ट सिद्ध्ये ॐ जपे पाठे विनियोगा ॥
ॐ महाविद्या प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिता ॥ चित्तिर्न किं गतं तपेन मातु ह्य
य नैदनीम् ॥ उक्तमा सर्वविद्यानां सर्वलोकवशकरिम् ॥ ॐ कृत्व करि क
रुकरिः गोकर्तिः यक्षकर्तिः धान्यकर्तिः द्रव्यकर्तिः पुष्टीकर्तिः पूष्टिकर्तिः वृष्टि
कर्तिः प्रजाकर्तिः सर्वशत्रुक्षयकर्तिः उच्छाहर चरवर्द्धनीः सर्वो गेव नृयो य

नी
चिन्तनी सर्वो ग्रह उच्चादनी ॥ पुत्रमित्रपौत्राभववर्द्धनीः आयुरारोग्यं च यति
विवर्द्धनी सर्वभूतसंभनी ॥ शिवनी मोहनी सर्वकृपा आकर्षणी सर्व
लोकवर्सीकर्तिः सर्वराजवर्सीकर्तिः सर्वजन्त्रप्रभेदनीः सर्वग्रह उच्चादनी
सफाहीकः दाहीकः त्रियाहीकः चातुर्थिकः पंचाहीकः षष्ठाहीकः सप्ता
हीकः अष्टाहीकः ॥ अर्द्धमाहीकः मासीकः घण्टमासीकः साम्बसरीकः वा
तिकः पौतिकः शेष्मीकः वसुतिकः कडविकः कृष्णः पांडुरोगः मुखरोगः ज
ठर ४ ७ ४ प्रमेचः गुल्म ४ वीसीर्यः दायक ४ विस्फोटकादिविनाशा यस्वा

हा॥ ॐ वेलाज्वर विरात्रीज्वर संततीज्वर व्यतितीज्वर अग्निज्वरः राक्षसज्वर
॥ भूतज्वरः पिशाचज्वर दृष्टिज्वरः स्फोटज्वरः तिवज्वरः मात्रिज्वरः ॥ मायाप्र
योगविचारि कीर्षी विनाशाय स्वाहा ॥ ॐ अक्षिभुलः कृद्धिभुलः वक्षभुलः
कर्णभुलः घ्राणभुलः दन्तभुलः गीडभुलः गलभुलः शिलभुलः शिला
र्द्धभुलः पादभुलः सर्वांगभुलः विनाशाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वव्याधिविनाशाय
स्वाहा ॥ ॐ शत्रुविनाशाय स्वाहा ॥ ॐ आत्मारक्षा प्रमात्मारक्षा ४ अग्निर
क्षा प्रतान्निरक्षा, ते ओं वालकं वधामि ४ ॥ ॐ डूं डूं देहीनीः ॥ ॐ डूं डूं देहीनीः

ॐ डूं डूं देहीनीः ॥ ॐ स्वरस्वरब्रह्म देह विश्वविश्वविह्वल देह ॥ ॐ स्वर ॥
कुमार देह भंज भंजानि सते देह प्रहर प्रहर ॥ ॐ देह देह ॥ होली होली मांहा
देह नृत्य नृत्य विश्वविश्व सर्वांगिनी ॥ हंसीनी व्रीशुलीनी गरडीणी रक्षारक्ष
॥ अथातो मेव विश्वामि ॥ अथ विज मेव ॥ ॐ हौं स्वाहा ॥ हूं हौं स्वाहा ॥ स्व
स्वाहा ॥ ॐ कौं कौं स्वाहा ॥ ॐ कौं कौं कौं कौं कौं ॥ ॐ कं स्वाहा ॥ ॐ कं कं स्वाहा ॥
ॐ खं स्वाहा ॥ ॐ खं खं स्वाहा ॥ ॐ गं स्वाहा ॥ ॐ गं गं स्वाहा ॥ ॐ घं स्वाहा ॥ ॐ
घं घं स्वाहा ॥ ॐ ङं स्वाहा ॥ ॐ ङं ङं स्वाहा ॥ ॐ वं स्वाहा ॥ ॐ वं वं स्वाहा ॥

ॐ हं स्वाहा ॥ ॐ छं स्वाहा ॥ ॐ जं स्वाहा ॥ ॐ जं स्वाहा ॥ ॐ रं स्वाहा ॥ ॐ रं स्वाहा ॥
ॐ नं स्वाहा ॥ ॐ नं स्वाहा ॥ ॐ टं स्वाहा ॥ ॐ टं स्वाहा ॥ ॐ ठं स्वाहा ॥ ॐ ठं स्वाहा ॥
ॐ डं स्वाहा ॥ ॐ डं स्वाहा ॥ ॐ ढं स्वाहा ॥ ॐ ढं स्वाहा ॥ ॐ णं स्वाहा ॥ ॐ णं स्वाहा ॥
ॐ तं स्वाहा ॥ ॐ तं स्वाहा ॥ ॐ थं स्वाहा ॥ ॐ थं स्वाहा ॥ ॐ दं स्वाहा ॥ ॐ दं स्वाहा ॥
ॐ धं स्वाहा ॥ ॐ धं स्वाहा ॥ ॐ नं स्वाहा ॥ ॐ नं स्वाहा ॥ ॐ मं स्वाहा ॥ ॐ मं स्वाहा ॥
ॐ पं स्वाहा ॥ ॐ पं स्वाहा ॥ ॐ फं स्वाहा ॥ ॐ फं स्वाहा ॥ ॐ वं स्वाहा ॥ ॐ वं स्वाहा ॥
ॐ भं स्वाहा ॥ ॐ भं स्वाहा ॥ ॐ मं स्वाहा ॥ ॐ मं स्वाहा ॥ ॐ यं स्वाहा ॥ ॐ यं स्वाहा ॥
ॐ रं स्वाहा ॥ ॐ रं स्वाहा ॥ ॐ लं स्वाहा ॥ ॐ लं स्वाहा ॥ ॐ वं स्वाहा ॥ ॐ वं स्वाहा ॥

स्वाहा ॥ ॐ शं स्वाहा ॥ ॐ शं स्वाहा ॥ ॐ षं स्वाहा ॥ ॐ षं स्वाहा ॥ ॐ सं स्वाहा ॥ ॐ सं स्वाहा ॥
ॐ हं स्वाहा ॥ ॐ हं स्वाहा ॥ ॐ हं स्वाहा ॥ ॐ हं स्वाहा ॥ ॐ हं स्वाहा ॥ ॐ हं स्वाहा ॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय मेरुवाय गरुडाय इगीये महाशक्ति कभूत प्रेत पिशाच
राक्षस वेताल सर्व विश्विक भयं नाशाय स्वाहा ॥ ॐ हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं ॥
ॐ गायत्री पूरण चारि उत्क मुखी नाग मुखी शीरोपचारिनी स्वाहा ॥ ॐ गंगा
लोमहराय स्वाहा ॥ ॐ वृषभ लो स्वाहा ॥ ॐ वं विष्णु वे स्वाहा ॥ ॐ शं शिवाय स्वा
हा ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा ॥ ॐ शं शोभाय स्वाहा ॥ ॐ मैत्र्याय स्वाहा ॥ ॐ
वं वृषाय स्वाहा ॥ ॐ वं वृहस्पतये स्वाहा ॥ ॐ शं शुक्राय स्वाहा ॥ ॐ सै

सोमश्च एय स्वाहा ॥ ॐ रँ राहवे स्वाहा ॥ ॐ कैकेतवे स्वाहा ॥ ॐ महाशक्ति
कभूतप्रेतपिशाचरक्षसर्ववैतालसर्वविश्विकभयविनाशाय स्वाहा ॥
ॐ संध्यासार्धशार्दूलकशरूपण ॥ भूशडी भीडोवात्तववतो ग्रहशस्त्राय
धामि विद्याय धीवन्धामी वाहवंधामी कर्णवन्धामी ॥ गतीवन्धामी नेत्र
वन्धामी ॥ आसावन्धामी नीरासावन्धामी सर्ववन्धामी ॥ सर्वमायावन्धा
मी ॥ सर्वजन्तुवन्धामी ॥ वंधनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ पंचजोजनविस्तीर्णह
्रोर्वंधति सराडल कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नेरवाय ग
णेश्वराय दुर्गायै महाशक्तिकभूतप्रेतपन्नगपिशाचरक्षसर्ववैताल

सर्वविश्विकभयाविनाशाय स्वाहा ॥ ॐ जयीदियायै मे एवा ॥ ॐ वं
हस्तो सपरिवारसहितो ॥ दिग्देवताधिपति यईद्वन्धामी ॥ इंदुमंडलवंध
वंध ॥ रक्षरक्षः सचलमचलः माक्रम्य माक्रम्य ॥ ॐ हौं ह्रीं स्फुर स्वा
हा ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ आग्नेयदीशाय मंजारु रुद्र
क्तिरुस्तो सपरिवारसहितो दिग्देवताधिपतिर्यं अग्निवन्धामी ॥ अग्निमं
डलवंधवंध ॥ रक्षरक्षः सचलमचलः ॥ माक्रम्य माक्रम्य ॥ ॐ हौं ह्रीं
स्फुर स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॥ ॐ देवियादीशाय मेरी
ॐ दक्षिणादीशाय मेरी ॥

मां हृदयं स हस्तोः सपरिवार सहीत दिग्देवता धिपति यं यं सर्वं धाम्नी ॥
दीर्घं मंडलं बन्धवन्ध ॥ रक्ष रक्ष ॥ मचल मचल ॥ माक्रम्य माक्रम्य ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं स्फुट स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ नैऋत्य दिशा
यी पेता रुद्र रुद्र हस्तोः सपरिवार सहीता दिग्देवता धिपति यं नित्यं बन्ध
मी ॥ नित्यं मंडलं बन्धवन्ध ॥ रक्ष रक्ष ॥ मचल मचल ॥ माक्रम्य माक्रम्य ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं स्फुट स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ पश्चिम दिशा
यी मकर रुद्र रुद्र पास हस्तोः ॥ सपरिवार सहीत ॥ दीग्देवता धिपति यं वर

मचल २ ॥
रावन्धामी ॥ वरुण मंडलं बन्धवन्ध ॥ रक्ष रक्ष ॥ माक्रम्य माक्रम्य ॥ ॐ
ह्रीं ह्रीं स्फुट स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ वायु वेदीशायी
मृगा रुद्रः धृज हस्तोः सपरिवार सहीत ॥ दीग्देवता धिपति यं वायु
वन्धामी ॥ वायु मंडलं बन्धवन्ध ॥ मचल मचल ॥ माक्रम्य माक्रम्य ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं स्फुट स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ उर्वर
दीशायी नर रुद्र रुद्र पास हस्तोः सपरिवार सहीत ॥ दीग्देवता धिपति यं
कृपेर बन्धवन्ध ॥ रक्ष रक्ष ॥ मचल मचल ॥ माक्रम्य माक्रम्य ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं

स्फुट् स्वाहा ॥७॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ३ॐ ईशान्य दिशा यी दया
रुद्र ८८ त्रिशूल हस्तं ॥ सपरिवार सहितं दिग्देवता धीपतये ॥ ३ॐ ईशान्य व
न्धामी ॥ ईशान्य मंडल बन्ध बन्ध ॥ रक्षरक्ष ॥ मचल मचल ॥ माक्रम्य मा
क्रम्य ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्फुट् स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ३ॐ अधो
दीशायो लोभ्यानां गुरुशूल ॥ सपरिवार सहितं दिग्देवता धीपतये ॥ का
लाग्निरुद्र बन्धामी ॥ कालाग्निरुद्र मंडल बन्ध बन्ध ॥ रक्षरक्ष ॥ मचल
मचल ॥ माक्रम्य माक्रम्य ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्फुट् स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगव

ते रुद्राय ॥ ३ॐ ब्रह्माण्ड दीशायो हंशा रुद्र ८ पूतक हस्तं ॥ सपरिवार स
हितं दिग्देवता धीपतये ॥ ब्रह्माण्ड बन्धामी ॥ ब्रह्माण्ड लव बन्ध बन्ध ॥
रक्षरक्ष ॥ मचल मचल ॥ माक्रम्य माक्रम्य ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्फुट् स्वाहा ॥ १० ॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ३ॐ अंतरिक्ष दिशायां गुरुशूल ८८ वीष चक्रं
गदापद्म हस्तं ॥ सपरिवार सहितं दिग्देवता धीपतये ॥ विष्णु बन्धामी ॥ विष्णु
मंडल बन्ध बन्ध ॥ रक्षरक्ष ॥ मचल मचल ॥ माक्रम्य माक्रम्य ॥ ॐ ह्रीं
ह्रीं ह्रीं स्फुट् स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ३ॐ पूर्वा यदिशायां

ऊजकोनामराक्षस॥ तस्य वज्रकस्य अष्टादशकोटी सहस्रपिशाचस्य दि
शावंधामी॥ ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा॥ १॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ अ
नेयदीशायो मरीचीकोनामराक्षस॥ तस्य मरिचीकस्य अष्टादशकोटी स
हस्रपिशाचस्य दीशावंधामी॥ ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा॥ २॥ ॐ नमो भग
वते रुद्राय ॥ ॐ दक्षीणदीशायो मेकेपीगलिकोनामराक्षस॥ तस्य मेक
पीगलीकनामराक्षसकस्य अष्टादशकोटी सहस्रस्य तस्य पिशाचस्य
दीशावंधामी॥ ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा॥ ३॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ न

मपदीशायो अग्निकालनामराक्षस॥ तस्य अग्निज्वालकस्य अष्टादशको
टी सहस्रपीशाचस्य दीशावंधामी॥ ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा॥ ४॥ ॐ न
मो भगवते रुद्राय ॥ ॐ पश्चिमदीशायो मेकवल्लोनामराक्षस॥ तस्य
मेकवल्लस्य अष्टादशकोटी सहस्रपीशाचस्य दीशावंधामी॥ ॐ अस्त्राय
फट् स्वाहा॥ ५॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ वायुवेदीशायो तस्य॥ कस्य
कोनामराक्षस॥ तस्य कस्य अष्टादशकोटी पीशाचस्य दिशावंधामी॥
ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा॥ ६॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ होमवन्न

डागस्योत्रे पाश्चे महाभीमो नाम राक्षसतस्य ॥ महाभीमस्य अष्टादश
कोटी सहस्रस्य पिशाचदिशां बन्धामि ॥ ॐ अष्टाय फट् स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ
नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ इहान्यदीशायी सवीथ कोतामराक्षसतस्य स
वीथकस्य अष्टादश कोटी सहस्रस्य तस्य पिशाचस्य दीशां बन्धामी ॥
ॐ अष्टाय फट् स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ नैरवाय ॥ गणेश
हाय ॥ हुगियो ॥ ॐ महाशक्ति की भूतप्रेतपिशाचराक्षसवैतालपन्नग
सर्वकैविक भयविनाशाय स्वाहा ॥ ॐ सिंघारक्षतुं ब्रह्माणी ॥

ह्रीं ह्रीं व्रीं क्षीं श्रीं ध्रूं हूं स्फट् स्वाहा ॥ ॐ शिरोरक्षतुं माहेश्वरी ॥ ॐ ह्रीं
ह्रीं व्रीं क्षीं श्रीं ध्रूं हूं स्फट् स्वाहा ॥ ॐ मुखरक्षतुं कोमारि ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं व्रीं
क्षीं श्रीं ध्रूं हूं स्फट् स्वाहा ॥ ॐ कण्ठरक्षतुं वैष्णवी ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं व्रीं क्षीं श्रीं ध्रूं हूं स्फट्
स्वाहा ॥ ॐ भ्रूजोरक्षतुं वाराही ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं व्रीं क्षीं श्रीं ध्रूं हूं स्फट् स्वाहा ॥
ॐ उदररक्षतुं चामुण्डा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं व्रीं क्षीं श्रीं ध्रूं हूं स्फट् स्वाहा ॥ ॐ पादोर
क्षतुं महारक्षी ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं व्रीं क्षीं श्रीं ध्रूं हूं स्फट् स्वाहा ॥ ॐ प्रणम्य महा
विद्यामहादेवस्य सन्निधौ ॥ स्वकीं स्वती वारेण पश्यति त्रियसमा

प्रोते ॥ स्त्री वा पुत्र वा वापी ॥ द्यो भव समारभेत् ॥ आरख्ये माहरख्ये
 श्वेव सर्व ग्रह निवारणी ॥ सर्व कार्या नि सिद्धि च शान्ति कर्म विसेयता ॥
 इति श्री महादेव कृतं महाविद्यास्तव संपूर्ण ॥ शुभम् ॥ यदक्षरं पदं
 मर्त्य मात्राहीन तथैव च ॥ विसर्ग विन्दु ही च क्षमेता परमेश्वरिण ॥ १॥
 प्रथमं त्रिना होम शानि सर्वा अरि र्थिना वारुनी ॥ होम यागुः ॥

वगलाया ७ अक्षर ॥

ॐ श्री वगला मूरवी सर्व दुःखानां वाचं मूरवं सै भयं २ अङ्कां किल पञ्च
 नाशाय २ श्री ॐ स्वाहा ॥ वगलायामुलमंत्रं ॥ जपः धाला ॥ १००१ ॥ ॐ देहि
 परमेश्वरि स्वाहा ॥ अश्वारुहा ॥ ॥ ॐ सहस्रार हं कट ॥ अदश मंत्रा
 ॥ यो रासु ॥ ॥ ऐं कीं सौं ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति तैलो को मोहि निमहासा
 ये माहे श्वरि सर्व यशु जन मनश्चक्षु सिरस्करणी कुरु २ स्वाहा ॥ तिरस्कर
 रणी ॥ ॥ ॐ रेवं रेवं रेवं कट प्राणा ज्ञे ससि २ हं कट सर्व समु संहारणाय
 शरभ सांताय पंक्षि राजा यहं कट स्वाहा ॥ शरभ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं कीं कां रे म्वरि

सर्वजनमोहनी सधारिजनवश्यकारिणि शर्वदुःखमलहनि सर्वस्त्रीपुरु
 षाकर्षिनिर्वैषम्यकराई शर्वशत्रुभयनाशिनी द्रावयः सर्वस्वभयमो
 हिनी देवराशुञ्चाटनः सर्ववक्रसुखाहा ॥ कालरात्रि ॥ ॥ दशाया
 ननविधि ॥ ॐ श्रौं स्मूं गन्धर्वदीपविडालक्षेत्रयालनतिदेवताय स्वाहा ॥
 ॥ समेकचोयावृत्ता ॥ ॐ श्रौं स्मूं गोमेदद्विपवनदक्षेत्रयालरक्षा
 देव्यै स्वाहा ॥ वेश्मनचोयमाहेस्वरि ॥ ॐ श्रौं स्मूं सरदीपसूमनीदेवी
 पूष्टेदत्तक्षेत्रयालाय स्वाहा ॥ फसिचोयाकौमारि ॥ ॐ श्रौं स्मूं सूर्येदि

मनोमनीदेवीमहानदक्षेत्रयालाय स्वाहा ॥ मयनकोठिचोवैष्णवि ॥
 ॐ श्रौं स्मूं नयनदीपकलाकृतनानादेविगोयालक्षेत्रयालाय स्वाहा ॥ न
 टारमन्त्रचोयावराहि ॥ ॐ श्रौं स्मूं वसन्तदीपश्रभाननक्षेत्रयाला
 यतारावतिदेवी स्वाहा ॥ लिङ्गुचोयायैश्वर्यायनि ॥ ॐ श्रौं स्मूं स्वर्ण
 दीपचन्द्रकाशधक्षेत्रयालशुभकारणदेवी स्वाहा ॥ गणप्याचोयाम
 रागु ॥ ॐ श्रौं स्मूं भरत्रक्षेत्रपरतिप्रियाक्षेत्रयालशवरिदेवी स्वाहा ॥
 शिवपुरिचो ॐ महालक्ष्मी ॥ इतिवह्निमंलुपुथमं ॥ ॥

ततो द्वितीय मण्डल ॥ ॐ प्रौं प्रौं रत्न द्विप महाकाय क्षेत्रपाल धर्मा देवी
 स्वाहा ॥ **प न वि या वु स्नाय** ॥ **नी** ॥ ॐ त्रौं त्रौं पूर द्विप श्रुति धर क्षेत्र
 पाल दत्त रा देवै स्वाहा ॥ **त्या डी या मा हे स्वरि** ॥ ॥ ॐ त्रौं त्रौं ऐं क
 पा दु द्विप वि कु म क्षेत्रपाल वामा हा देवै स्वाहा ॥ **रु रि चो या** ॥ **को मा**
रि ॥ ॥ ॐ त्रौं त्रौं स्वरा द्विप चरा न्नाथ क्षेत्रपाल शुभा कि रा देवी
 स्वाहा ॥ **गौ पु या** ॥ **वै ह्नु वि** ॥ ॥ ॐ त्रौं त्रौं पूर द्विप श्रुति धर क्षेत्र
 पाल दत्त रा देवै स्वाहा ॥ **त ले जु या वा रा हि** ॥ ॥ ॐ त्रौं त्रौं न य न

द्विप गौया ल क्षेत्रपाल काम कि देवै स्वाहा ॥ **न व ति ग या ऐं द्रा य नी**
 ॥ ॐ त्रौं त्रौं स्वरा द्विप चरा न्नाथ क्षेत्रपाल शुभा की रा देवै स्वाहा ॥ **गौ**
क्र रा ॥ **या चा मू नु** ॥ ॥ ॐ त्रौं त्रौं गौ वर्द्धन द्विप चित्रार्द्ध क्षेत्र
 पाल नदी देवै स्वाहा ॥ **सा ल दु या महा** ॥ **ल क्ष्मी** ॥ **इ ति द्वि द्वि प**
मण्डलं ॥ **ततो त्रि तिय मण्डलं** ॥ ॐ प्रौं प्रौं क्षेत्रे असिताङ्ग भैरवाय वृं
 स्नाय रम्यै स्वाहा ॥ **व ता क्षेत्र वु स्नाय नी** ॥ ॥ ॐ वाराणशिमल क्षेत्रे ह्नु ल भैरवा
 य मा हे स्वरि देवै स्वाहा ॥ **गि म ले या मा हे स्वरि** ॥ ॥ ॐ कौं कौं ए पूर महा क्षेत्रे चरा

वाराणशिमल क्षेत्रे ह्नु ल भैरवा
 स्नाय रम्यै स्वाहा

भैरवाय को मारि देवै स्वाहा ॥ सुगु गुठिया को मारि ॥ ॥ ॐ अट्टह सेम
 हा क्षेत्रे को ध भैरवाय वै भुवि देवै स्वाहा ॥ बल पुया वै भुवि ॥ ॥ ॐ जय
 तीमहा क्षेत्रे उन्मत्त भैरवाय वा एहि देवै स्वाहा ॥ जो सपिया वा एहि ॥ ॥
 ॐ चरित्र महा क्षेत्रे कया ल भैरवाय ऐं गु यणी देवै स्वाहा ॥ तो दरया ऐं गु
 यनि ॥ ॥ ॐ ऐ कया द महा क्षेत्रे निषण भैरवाय चा मूरु देवै स्वाहा ॥ चे
 ल ग या चा मूरु ॥ ॥ ॐ देवी कोट महा क्षेत्रे स हार भैरवाय महा लक्ष्मी
 देवै स्वाहा ॥ कौंतिया महा लक्ष्मी ॥ इति नेया ल त्रितिय म दल ॥ शुभं म शुभ

वाम म दोषो न दिय त्प ॥ शिषितं क र्मा चार्ये जिह्मान सिंह नाम नंदति सेवत
 ६६ मिति चैत्र शुदि श्रेष्ठ २ सप्त धय कादि नृजुल भु ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥
 श्री ग ने शा य नमः ॥ ॥ श्री नृ सिंह प नमः ॥ ॥ श्री ब्रह्मा वा च ॥ अनेक म
 त्र कोटि शा नृ सिंह नाम उ च्यत ॥ अथो विधिः नृ भुक्ष्य या त्रि विष रोगा निवार
 नं ॥ १ ॥ ॐ अस्य श्री लक्ष्मी नृ सिंह म त्र क व च स्य ब्रह्मा ऋषि र नृ कृष्ण ॥ ॐ
 वी जं रौ श क्रि रो किल कं ॥ श्री नृ सिंह देवता ॥ मम सर्व रोगा नां सर्व दोषा नां
 चौर प न ग वा घृ वृश्चि क भूत प्रेत पिशा च वां किं पृथु र यं त्र मंत्र नै क
 किनी

नृ सिंह क व च

मो भगवते नारायणाय कुरुत वहनाय मम शत्रुसहाराय स्वा
हा ३ ॐ नमो भगवते गार्हजाननाय सर्वरोगविघ्नादिहराय स्वा
हा ३ ॐ नमो भगवते स्वरामुखाय सर्वसंयत्ताय स्वाहा ४ ॐ नमो
भगवते हयग्रीवाय सकलजनवसकराय स्वाहा ५ इति मूलमंत्राः ॥ अ
थ यक्षप्रयोगाः ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटाय पूर्वमुखाय सर्वजनवसकराय
स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटाय दक्षिणमुखाय मम श
त्रुसहाराय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटाय पश्चिममुखाय स्वाहा ॥ ३ ॥

रुडमुखाय सर्वरोगविषउचाटनाय गौं ५ स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ हरिमर्कट
कटाय उन्नरसूकरसुखाय ममशत्रुबागस्तंभनाय सौं ५ स्वाहा ॥
ॐ हरिमर्कट मर्कटाय उर्द्ध्वहयग्रीवमुखाय ^{ममशत्रु} सर्वकलननाचिदे
यनाय हूं ५ स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ हरिमर्कट मर्कटाय श्रीपंचमुख
हनुमंताय सकलद्रव्यादिनिष्ठाकर्षणाय हूं ५ हों ५ गौं ५ सौं
५ हूं ५ ठूं ५ स्वाहा ॥ ६ ॥ एते मंत्राणां एकैकं षट्प्रयोगाः ॥
ॐ हरिमर्कट मर्कटाय श्रीरामदत्ताय अजनीमुनाय शि

तादुःखनिवारनाय लंकादहनाय महाबलपराडाय काला
णसखाय सकलबुद्धाण्डविश्वरूपाय सप्तसमुद्रनिरालंघना
य दिगलनयनाय अमितविक्रमाय सूर्यविम्बफलबुद्ध्या
निरालंकरणाय सजिवनी शोभनी आननाय लक्ष्मणार
क्षाकरनाय शीताये श्यामाय दशग्रीवविध्वंशनाय रामे
षुसाधनाय ममागारि रक्ष २ ठूं ३ स्वाहा इति शुक्लादशमं
ब्रह्मप्रयोगं साधयत् ॥ ॥ ॐ हरिमर्कट मर्कटाय २ ॥

नीमर्भसंभृतं कुमारीं ब्रह्मचारिणं सर्वदा त्रु विनाशाय हनुमते
स्वहम् ॐ हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा इति मंत्रं सर्व
जक्ष मो भवति ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटाय ईंद्र रूपाय पूर्व रक्ष
रक्ष स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटाय अति रूपायः अग्नि
रक्ष र स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटाय यम रूपायः दक्षिण
रक्ष र स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटाय त्रैलोक्य रूपायः नेत्रि
रक्ष र स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटाय वरूणा रूपायः प
थरक्ष र स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटाय वायु रूपायः वा

युवो रक्ष स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटाय कुबेर रूपायः
उत्तरे रक्ष र स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटायः इशाने देव
रूपायः इशाने रक्ष र स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कटाय
यः ब्रह्म रूपायः उर्द्ध दीगे रक्ष र स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ हरि मर्क
ट मर्कटायः वासुकि रूपायः पाताले रक्ष र स्वाहा ॥ १० ॥
इति दीगा बन्धन ॥ ॥ अथ नमो ॥ ॐ हरि मर्कट मर्कट

संशयः सिधुं रक्क पुं ये श्रुताना वन्त पचारकेः एकवस्त्रे चूपदो विष्णु
यक्षाभसंयुतैः नानाकलेशकर्मैश्च पूजनीयाद्वरिततः संगतः
वासरे देवि तथा च शनिवासरे सहस्रेकं पठेद्देवि पुरश्चरण
कर्मवेत्तः यतिंच वस्त्रचारिंच भोजयेद्द्वये च तान् मन
सेषितवच्यकार्ये सर्वं भवति नान्यथा विस्मयो नात्र कर्तव्या
सत्यं सत्यं न संशयः एकवारं द्विवारं वा त्रिवारं वा समाहितः
एक कालं द्विकालं वा त्रिकालं वा समाहितः महाभये स

मुत्पन्ने पदस्त्रोत्रैकशतम्: तथा रोगाज्वरे नष्टनिरात्म्येशतत्रयं
चोटे देव्यो वा पुभयेः उद्यानेः सुन्ये कामनेः महानदि प्रतरणे
सर्वसंकष्टः पागमेः महारणेः महाघोरेः पठेत्स्त्रोत्रं सुरेश्वरिः
चतुस्त्रिंशत् सहस्राणि ध्यात्वा दिवं हरिं पठेत् साक्षात् कुरु
मंतो भूत्वा त्रैलोक्ये विचरं छिवेः इति ते कथितं गुह्यं सारांशा
रपरः शिवं गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः वि
दुर्भक्ताय शोभायः शान्तायः दम्भवर्जितेः शीयेत्यादि वेदे

अन्यथा शीवहा भवेत् डामरोक्तं महामंत्रं सर्वकार्यकरं
 इति श्री उडुमरतंत्रे उमामहेश्वरसंवादे हनुमत्कल्पे विश्व
 कवचं संपूर्णम् ॥ ॥ यदि अधो मसुधोवाले घन दोष न
 यते ॥ शुभम् ॥ हनुमत्पितृरक्तु नमः ॥ ॥ ॐ मर्कट मर्कट
 यनमस्वाहा ॥ २९ समंत्रले दाहिना हात लेवनः बाया हातले मेतनुः पं
 चपंधन लोहा वंधन शुली जावस ॥ ॐ काल २ निर्मल जाति हनु
 मान जुध वंद्य स्वाहा ॥ २९ यसमंत्रले जानिमंत्रि वायाक निधी

छोई प्राठ दिन सम्पट पानि जुवानः सामल कपत हरनाल जावस ॥
 ॐ आहो विरगले गर्जि मेरे आगे लोहा कोटा मेरे पादे लोहा कोटा
 मेरे आगे काली या वेताल मेरे पादे काया भूत आहो वा अर्जु
 न गदि पना पधुतः कुतो बोला उतु नर्क जानु अकास ईंद्र देव
 ता साहि तेति सकोटी देवता सादि साधो २ कह मह विरसा
 धो २ कहो विर ॥ १०८ विरजगा दुया मंत्र हो ॥ १ ॥

ॐ काल २ माहाकासविषकास स्वाहा ॥ १० ॥ यसमंत्र
निष्ठानुः वालखजन्महोः सालप्रकेः ७ यमप्रया ॥
ॐ कालामेध काला यवतरगत र हेरगत थामेकान
रुफामाष्टादेविकिशक्ति ईस्वरमादेव गौरापावता
किवाचा ॥ ७ ॥ ह्रीं य ॥















ॐ वृत्ताय निबृहत्तयुत्रिवाचा सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ धर्मत्रय धातु
 ० वीने हाना अमिद्धि दईवः हायां वृत्ताय नीचा के जयल कक्षि १०००००
 याय ६ साल भावन जय दोल ४०००० प्री दोल हाय हो मः या भावर्गः
 तरपन भावन दोल ४००० य दोल जय यायः माजन भावन वेसल जय
 ४०० याय भोजन भावन माजिकः प्राप्ता शास्त्रिन के माल ॥ वल
 तिनि मंत्र सिद्धि जुडवः वीने सदा ऊ वाक दयि गुः धो जुलो ॥ ५५